जीवक

SCIENCE AND TECHNOLOGY IN INDIA

For-P.G. SEM.-1

CC-4, UNIT -5

ARUN KUMAR RAI

ASST.PROFESSOR

P.G.DEPT.OF HISTORY

MAHARAJA COLLEGE,ARA.

जीवक

- जीवक औषध विज्ञान और शल्य विधा का प्रसिद्ध जानकार व्यक्ति थे। वे राजगृह के निवासी थे और बिंबिसार, गौतम बुद्ध तथा आजाद शत्रु का समकालीन थे।
- ऐसा प्रतीत होता है कि राजगृह नगरवधू **शालवती** के गर्भ से जीवक का जन्म हुआ। लोक लज्जा के लिहाज से शालवती ने अपने दासी को आदेश दिया कि नवजात शिशु को कूड़ेदानी में रखकर कूड़े के ढेर में फेंक दे। जिस समय दासी ने शिशु को कूड़ेदानी में रखकर कूड़े में फेंका उसी समय राजकुमार अभय (आजादशत्रु) जो दरबार में जा रहा था, उसकी नजर पड़ी।
- उसने अपने अंगरक्षकों से शिशु को उठाकर अंत:पुर में भिजवा दिया। उसे जीवित देखकर राजकुमार अभय ने उसका नाम **जीवक** रख दिया।
- कुमार द्वारा पाले जाने के कारण उसे '**कौमारभृत्य**' भी कहा जाने लगा।

जीवक

- बड़ा होने पर जीवक को किसी शिल्प विद्या में पारंगत होने की इच्छा जागृत हुई। उस समय तक्षशिला में **आत्रेय** नामक एक लोक प्रसिद्ध वैद्य रहते थे। राजकुमार अभय से पूछे बगैर जीवक राजगृह से तक्षशिला की ओर चल पड़ा जहां पहुंचकर वह आत्रेय से मिला और उनसे वैध विद्या सीखने की इच्छा व्यक्त की। 7 वर्ष तक जीवक वैध विद्या सीखता रहा। पारंगत होने पर वह गुरु की आज्ञा से अपने घर राजगृह लौटा।
- वापस आने के क्रम में जीवक ने साकेत में नगर के धनाढय सेठ की पत्नी जो की भयंकर सिरोरोग से ग्रसित थी उसे ठीक किया। बदले में उसे 16 हजार काषार्पण सहित अन्य कमाई हुई।
- मगध नरेश **बिंबिसार** भगंदर रोग से पीड़ित था। जीवक ने उसे इस रोग से मुक्त किया फल स्वरुप बिंबिसार ने जीवक को राजवैद्य के रूप में रख लिया और यह कार्य सौंपा की वह उसके अंत:पुर के स्वास्थ्य की देखरेख का काम करें ।

जीवक

- शीघ्र ही जीवक की ख्याति चारों ओर फैलने लगी। राजगृह का एक सेठ 7 वर्ष से सिरो रोग से पीड़ित था। कई बड़े-बड़े वैधों से इलाज करने के बावजूद उसका रोग ठीक नहीं हो पाया था। जीवक ने 21 दिन की अवधि में ही सेठ को स्वस्थ कर दिया जिसे उसे काफी धन की प्राप्ति हुई।
- वाराणसी के नगर सेठ का पुत्र मोक्खचिक रोग से पीड़ित था और सिर के बल चक्कर काटता था। उसकी आंत में ग्रंथि रोग हो गया था फलत: पतली खिचड़ी भी वह पचा नहीं पता था। जीवक ने शल्य चिकित्सा द्वारा उसका पेट चीरकर आंतें ठीक की तथा उसका पेट सिल दिया जिससे वह शीघ्र ही स्वस्थ हो गया। बदले में उसे 16000 मुद्राएं प्राप्त हुई।

जीवक

- जीवक की ख्याति काफी दूर तक फैल चुकी थी। पांडु रोग से पीड़ित उज्जैन का राजा **प्रधोत** ने अपना इलाज कई वैधों से कराया किंतु कोई लाभ न हुआ। राजा को जीवक के बारे में पता चला। उसने अपने दूत को बिंबिसार के पास भेजा। दूत ने बिंबिसार से अनुरोध किया कि कुछ दिनों के लिए जीवक को उज्जैन भेज दे। बिंबिसार के कहने पर जीवक उज्जैन पहुंचे और राजा प्रधोत की बीमारी का इलाज शुरू किया।
- जीवक ने औषधि युक्त घी के जरिए राजा प्रधोत को स्वस्थ किया। बदले में उसे शिवि देश का बना दुशाला मिला जो लाखों में एक था।

जीवक

- गौतम बुद्ध की तबीयत खराब होने पर उनके शिष्य आनंद ने बुद्ध के रोग का इलाज करने के संबंध में जीवक से बात की। जीवक ने तीन चम्मच पानी में कई औषधीय को मिलाकर दवा तैयार कर दी और बुद्ध को सलाह दी कि वह उसे नाक से सूंघें। उसने गर्म जल से स्नान करने और पतली खिचड़ी खाने का सलाह दी। इस उपचार से बुद्ध शीघ्र ही स्वस्थ हो गए। जीवक ने बुद्ध को शिवि देश से प्राप्त दोशाला समर्पित किया।
- जीवक आम्र वन में बुद्ध के साथ घूमता था। उसने उनके लिए एक विहार बनवाया। जीवक के साथ आजादशत्रु भी बुद्ध से मिलने जाता था।

जीवक

- जीवक एक राजवैद्य था। आम आदमी का उसके पास तक पहुंच कर अपने रोग का इलाज कराना संभव नहीं था। बिंबिसार के आदेश से वह बौद्ध भिक्षु का इलाज करता था।
- जीवक के कार्यों को देखने से पता चलता है कि धनाढय एवं राज परिवार के सदस्यों के लिए ही वैधों से इलाज संभव था। आम आदमी जादू टोना एवं चंद प्रचलित औषधीय से ही अपना रोग का इलाज करता था।
- इसके बावजूद भी भारतीय चिकित्सा शास्त्र में जीवक का नाम आज भी बहुत श्रद्धा से लिया जाता है।